हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी

गुरुदत्त मिश्रा
मौसम विज्ञान केंद्र भोपाल - 462011
अणुडाक: gdm.met@gmail.com
सम्पर्क: 9425080082

विषय तालिका

- हिन्दी
- सूचना प्रौद्योगिकी
- प्रौद्योगिकी का प्रभाव
- विभिन्न क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी
- भारतीय सरकार द्वारा नये डिजिटल कार्यक्रम
- भारत मौसम विज्ञान विभाग में हिंदी एवं सूचना प्रौद्योगिकी
    - कृषि परामर्श सेवा
    - मौसम सेवायें
- निष्कर्ष

हिन्दी की वर्त्तमान अवस्था

- संपर्क भाषा, राजभाषा, आधिकारिक सरकार की भाषा है
- 350 मिलियन लोग पहली भाषा हिंदी बोलते है
- सभी दृष्टियों से समृद्ध
- संसार की उन्नत भाषाओं में सबसे अधिक व्यवस्थित

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र

चित्र १: हिंदी भाषा बोलने का क्षेत्रवार वर्गीकरण

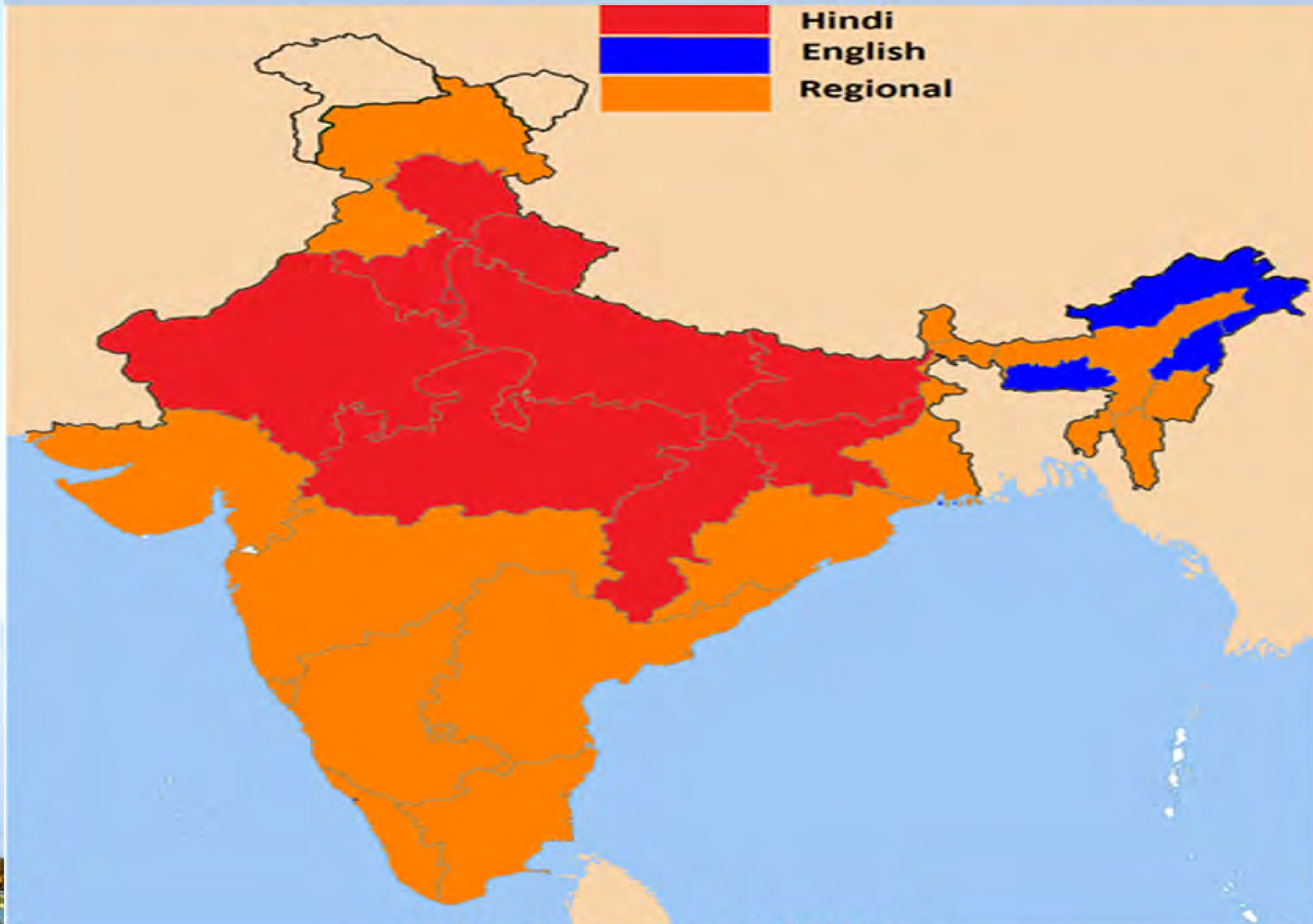

- भारत में सामान्य तौर पर सूचना प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका अहम है।यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अंग्रेजी भारत में व्यापक रूप से बोली जाती है; भले ही जनसंख्या का केवल 5% अंग्रेजी में औपचारिक रूप से द्विभाषी है, भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कम से कम कुछ अंग्रेजी बोलता है।
- अंग्रेजी भारत में अक्सर एक कुलीन परवरिश की निशानी के रूप में सोचा जाता है। यह ब्रिटिश शासन, जहां किसी को भी आगे निकलना नहीं चाहता हैं, जो भारत दुनिया में आगे निकलना चाहता हैं उसने अंग्रेजों के साथ सौदा किया है, और आंशिक रूप में अंग्रेजी सीखने के लिए किया था ।यहां तक कि इंटरनेट का प्रयोग अंग्रेजी बोलने के लिए किया था इन कारणों से लंबे समय से भारत में दोनों के लिए (हिंदी एवं अंग्रेजी), सूचना प्रौद्योगिकी प्रणालियों और अन्य उत्पादों के लाभ लेने के लिए भारत द्वारा ग्रहण किया गया है।
- हालांकि हाल के वर्षों में यह अब सच है, और तथ्य यह है कि भारतीयों को आप सबसे अधिक सॉफ्टवेयर और हिन्दी हार्डवेयर विशिष्ट संस्करणों के प्रति सचेत प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र २: दुनिया में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा (लाखों में)

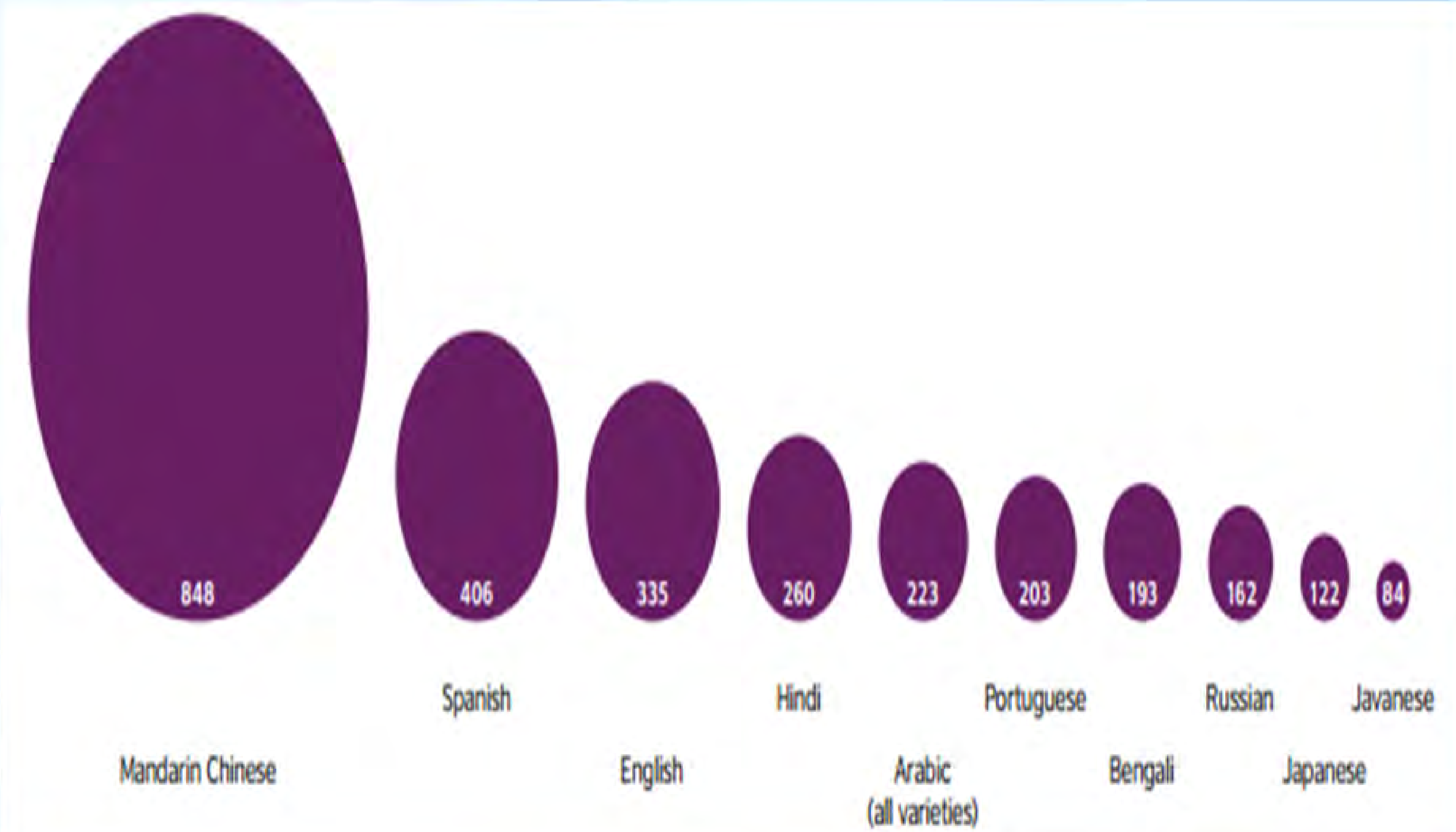

सूचना प्रौद्योगिकी (भारत के सन्दर्भ में)

- विश्व परिदृश्य पर प्रमुखता से भारत की सरल वृद्धि है
- भारत दुनिया भर में आईटी कंपनियों के लिए सर्वोच्च गंतव्य है
- भारत की इंटरनेट अर्थव्यवस्था के 2018 तक 10 खरब रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है
- भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की सालाना 11 फीसदी बढ़ने और वर्तमान वार्षिक राजस्व वित्तीय वर्ष 2025 तक 350 अरब अमेरिकी $ तक पहुँचने की उम्मीद है

- इस बदलाव के लिए एक मुख्य कारण यह है कि हिन्दी न केवल भारत, जो निश्चित रूप से गर्व की बात हैं हिंदी में तकनीक जानकारी उपलब्ध करना होगा क्यूंकि यह आधिकारिक सरकार की भाषा है, लेकिन यह भी साधारण तथ्य यह है कि लगभग 350 मिलियन लोग पहली भाषा हिंदी बोलते है।
- सूचना प्रौद्योगिकी विश्व परिदृश्य पर प्रमुखता से भारत की सरल वृद्धि है।
- भारत अंतरराष्ट्रीय नीति में एक असली खिलाड़ी के रूप में परिपक्व होती है, यह दोनों कंपनियों के लिए उसे लोग उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए और के लिए दूसरों पर अपनी संस्कृति पर जोर देते हुए शुरू करने के लिए स्वाभाविक है। इन दोनों पहलुओं हिन्दी में सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख हिस्सा आज बनाने के लिए गठबंधन।

- अमेरिका वह देश है जहाँ टेक्नॉलॉजी की शुराआत हुई, परन्तु भारत की मदद के बिना वह आगे नहीं बढ़ सकती थी।
- कुछ बरसों में इंटरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा, वे है- हिंदी, मैंडरिन और इंग्लिश।
- भारत के सन्दर्भ में, आईटी के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में ढालना ही होगा क्यूंकि हमारे पास संख्या बल है। हमारे पास पढेलिखे, समझदार और स्थानीय भाषा को अहिमयत देने वाले लोगों की तादाद करोड़ो में है। अगर इन करोड़ो तक पहुँचना है, तो उसे भारतीयता, भारतीय भाषा और भारतीय परिवेश में ढलना होगा। इसे हम तकनीकी भाषा में लोकलाइजेशन कहते हैं।
- हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में मानकीकरण (स्टैंडर्डाइज़ेशन) आज भी एक बहुत बड़ी समस्या है। यूनीकोड के जरिए हम मानकीकरण की दिशा में बढ़ चुके हैं।
- अगर आईटी में हिंदी का पूरा फायदा उठाना है, तो बहुत सस्ती दरों पर सॉफ्टवेयर मुहैया कराए जाने होंगे।

चित्र ३: भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी उद्योगों के आंकड़े

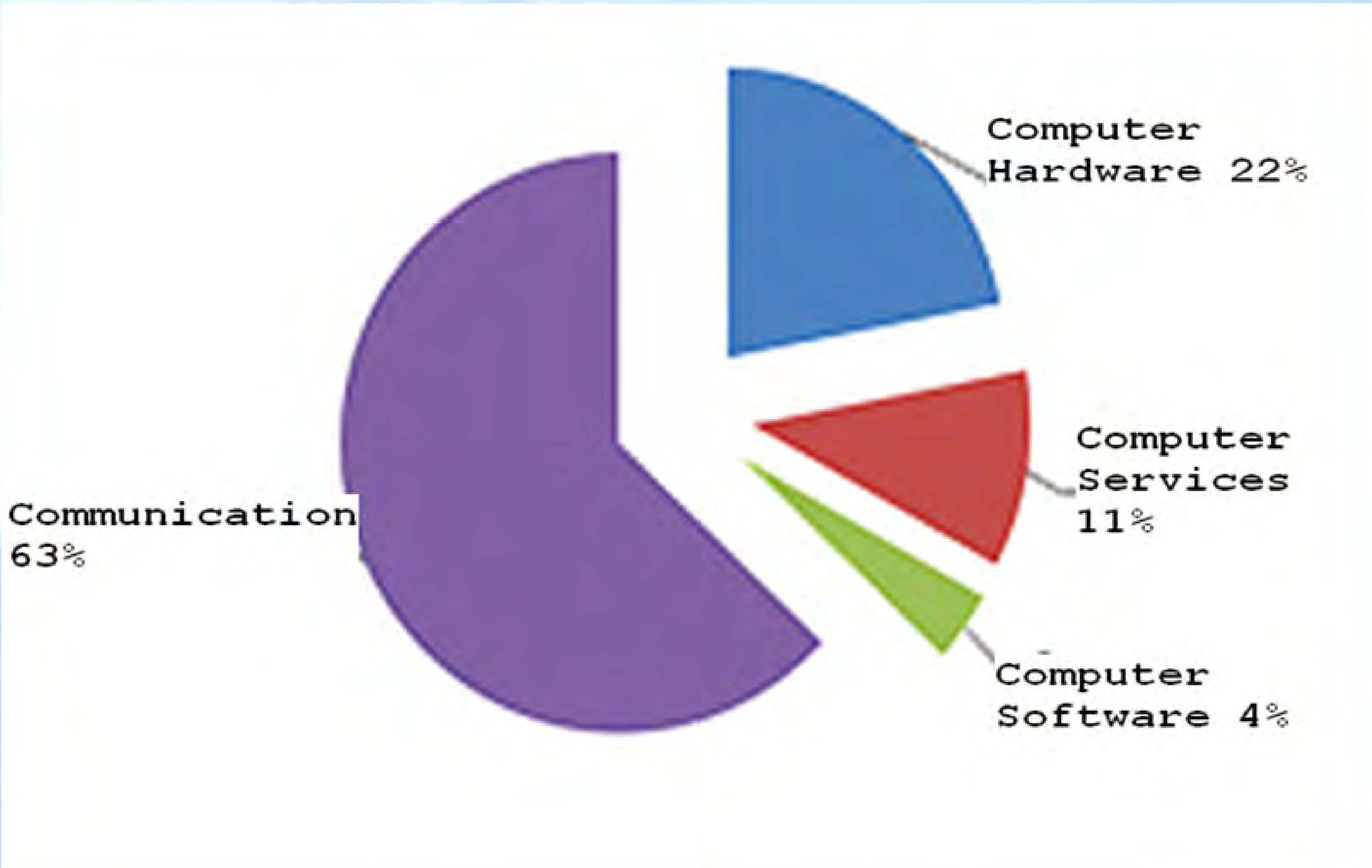

- कुछ बरसों में इंटरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा, वे है- हिंदी, मैंडरिन और इंग्लिश
- आईटी के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में ढालना ही होगा
- यूनीकोड के जरिए हम मानकीकरण की दिशा में बढ़ चुके हैं

प्रौद्योगिकी का प्रभाव

- इंटरनेट के क्षेत्रीय समन्वय को बढ़ावा देता है।
- पायलट परियोजनाओं को स्थापित करता है।
- विकासात्मक दृष्टिकोण के लिए संचार का उपयोग करता।
- इंटरनेट सेवा के प्रावधान और दूरसंचार बुनियादी सुविधाओं के लिए वकालत में हितधारकों सहायता करते हैं।

चित्र ४ : विभिन्न क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी

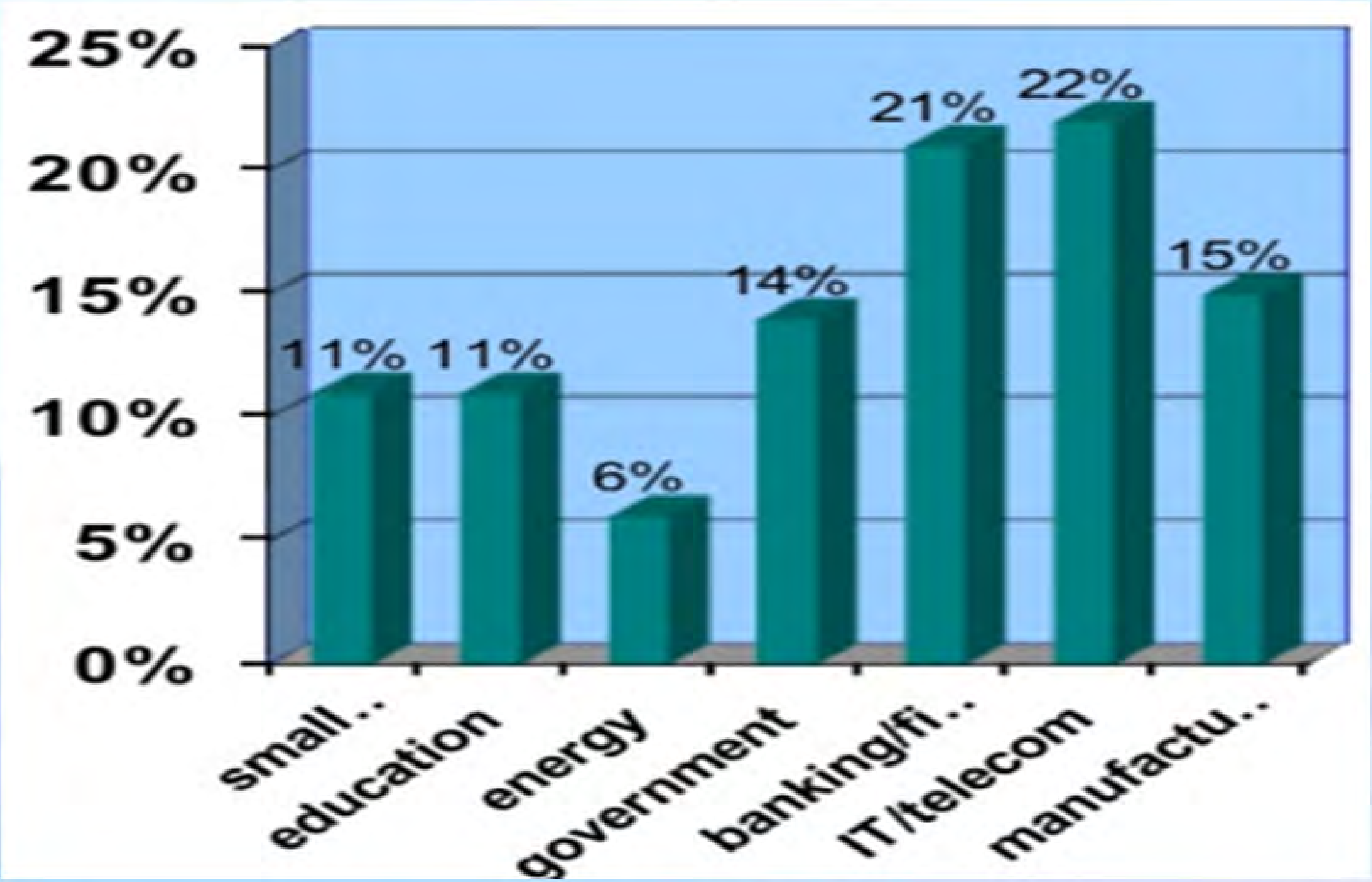

चित्र ५: भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के बाजार का आकार (यूएस $ बिलियन)

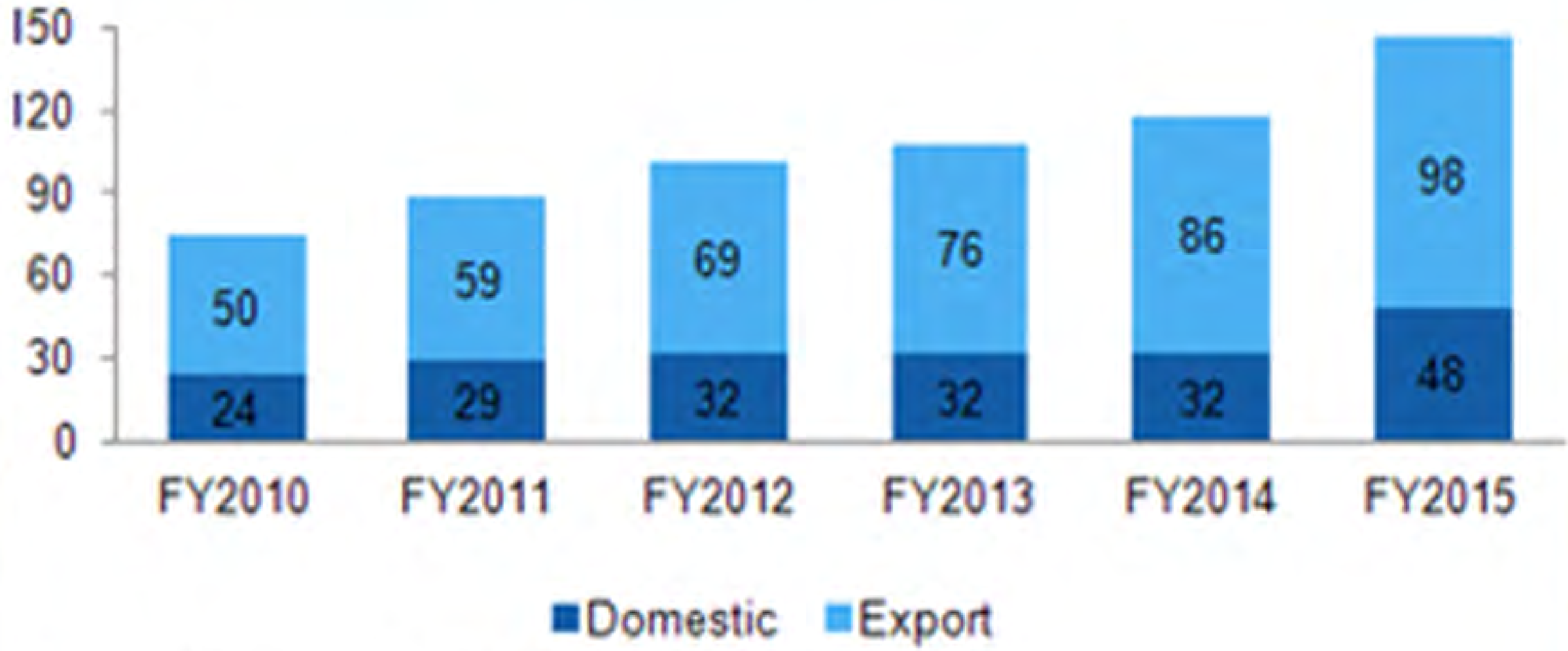

Source: Nasscom, TechSci Research
Note: E - Estimates

भारतीय सरकार द्वारा नये डिजिटल कार्यक्रम

प्रधानमंत्री जन-धन योजना
मेरा खाता भाग्य विधाता

MAKE IN INDIA

मन की बात
AIR
आकाशवाणी

Digital India
Power To Empower

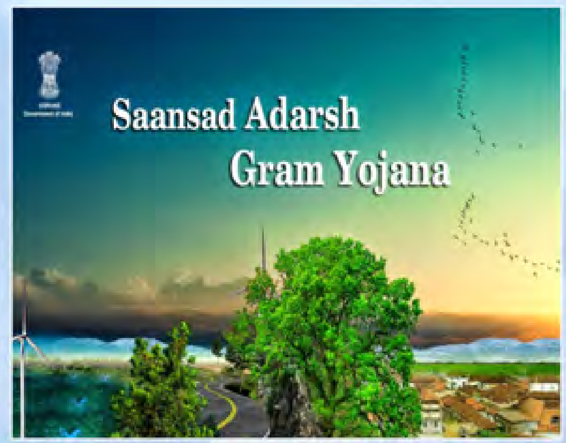

- प्रत्येक कार्यक्रम का मकसद अधिकतम आबादी तक पहुंचने और उन्हें लाभान्वित करना है
- प्रत्येक कार्यक्रम को हिन्दी की आवश्यकता है
- हिन्दी भारत के विकास के लिए आधार है
- अधिकतम आबादी और कमजोर वर्ग तक पहुंचने का माध्यम हिंदी है

भारत मौसम विज्ञान विभाग में हिंदी एवं सूचना प्रौद्योगिकी

मौसम सेवाओं के प्रसार में संचार व्यवस्था की भूमिका

- आज के समाज की रचना कई तकनीकियों के आधार पर की है, जिसमें कम्प्यूटरों का प्रसार अधिक गति से हुआ है, आने वाले वर्षो में सूचना क्रांति के होने से कृषि एवं ग्रामीण विकास में कम्प्यूटरों की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है ।
- आज के इस प्रौद्योगिकी संसार में जनसंख्या वृद्धि भी एक सामाजिक अभिशाप बन गया है । आधुनिक समाज में विकास के हर मुकाम पर कम्प्यूटर के बिना विकास की गति को बढाना या उसे स्थायी रखना न केवल कठिन अपितु असंभव सा प्रतीत होता है ।
- रेडियों, ट्रांजिस्टर, टेलीफोन, सेलफोन, कम्प्यूटर, टेलीविजन, दूरसंचार उपग्रह, इन्टरनेट, विडियोफोन, विडियो कॉन्फ्रेंस, डिजिटल डायरी इत्यादि सूचना कांति के ही अंग है ।
- आज एक माइक्रोप्रोसेसर जिसे हम आसानी से अपनी जेब में रख सकते है एवं छोटे लेपटॉप जो सस्ते तथा सुलभ है ,पहले दूरसंचार में हमारा ज्ञान टेलीप्रिन्टर ,मोर्सकोड जैसे बेतार यंत्र तक ही सीमित था जिससे सूचनाएँ भेजी जाती थी आज काफी तीव्र गति वाले संचार तंत्रों का जाल उपलब्ध है जिससे कम समय में अधिक से अधिक सूचनाएँ भेजी जा सकती है ।

- अब तो गॉव–गॉव घर तक इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है गॉवों में मोबाईल टावर का विस्तृत जाल है । आज पहली कक्षा का बच्चा भी इस नई सूचना तकनीकि का उपयोग अच्छे से कर सकता है।
- यह उत्तम दिशा निर्देशन योजनानुसार कार्यक्रम कियान्वयन,उत्कृष्ठ वैज्ञानिक परिणाम का नतीजा है। आधुनिक सूचना तकनीकि से कम्प्यूटर द्वारा देश में फैले विभिन्न विक्रय केन्द्रों के ऑकडो के आधार पर आगामी उत्पादन संबंधी निर्णय किए जाते है अभियांत्रिकी प्रकियाएँ स्वचल मशीनों द्वारा पूर्ण की जा रही है ।
- घनी एवं अधिक जनसंख्या वाले शहरों में यातायात के संकेत भी संगठन द्वारा नियमित किए जा रहे है। किसी भी सिंचाई परियोजना की सम्भावना और आर्थिक उपयोगिता देखनें के लिए अलग–अलग दृष्टिकोण से बहुत अधिक जानकारी, सर्वेक्षण डाटा, मौसमी ऑकडे इत्यादि को एकत्रित करना एवं उनका विश्लेषण करना कम्प्यूटर से काफी आसान एवं गतिशील हो गया है ।
- अधिक फसल का उत्पादन एवं कम लागत के लिए आप्टिमाइजेशन तकनीकि भी सूचना कांति एवं कम्प्यूटर के कारण सहज एवं सर्वोपयोगी हो सकी है ।

- हिंदी आम जनता की बोलचाल की भाषा है
- आधुनिक समाज में विकास के हर मुकाम पर कम्प्यूटर के बिना विकास की गति को बढाना या उसे स्थायी रखना न केवल कठिन अपितु असंभव सा प्रतीत होता है ।
- गॉव–गॉव घर तक इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है गॉवों में मोबाईल टावर का विस्तृत जाल है ।
- जानकारी , सर्वेक्षण डाटा, मौसमी ऑकडे इत्यादि को एकत्रित करना एवं उनका विश्लेषण करना कम्प्यूटर से काफी आसान एवं गतिशील हो गया है

कृषि मौसम परामर्श सेवा

प्रत्येक मृदा की उर्वरता के अनुसार उसमें:

- रासायनिक उर्वरक डाला जाना,
- कब एवं कितनी मात्रा में सिंचाई करना
- किस प्रकार का कीटनाशक रसायन
- कितनी मात्रा में कीटनाशक रसायन फसल पर छिडकना है ,

इन सबकी गणना करना एवं प्रत्येक कृषि जोन, प्रक्षेत्र तथा फसल के लिए बताना मानव अकेले के बस की बात नही रह गयी है। अपितु ये सभी जटिल कार्य कम्प्यूटर के लिए कुछ सेकेन्डों का है, बस कुछ प्रारंभिक डाटा की आवश्यकता पडेगी ।

- जल सिंचन योजना का आर्थिक उपयोगिता जानने के लिए पूर्वेक्षण किया जाता है । इसमें भूमि का जल सिंचनीय योग क्षेत्रफल ,इसके अलग–अलग गुण धर्म उनके लिए उपयुक्त फसल अनुक्रम जिसमें ज्यादा से ज्यादा उत्पादन होगा ।
- यह सब ज्ञात करना पडता है , इसके लिए इन सब प्राचलों का क्रमचय और संयोजन करके उपलब्ध होने वाले पानी की गुणवत्ता और मात्रा के अनुसार किस तरह का फसल अनुक्रम फायदेमंद होगा, यह सुनिश्चित करना कम्प्यूटर के माध्यम से आज अत्यंत सरल हो गया है ।
- जलवायु के साथ–साथ जिस प्रकार पूरे देश में मृदा के प्रकार एवं उर्वरा शक्ति में परिवर्तन हो रहा है । वर्षा ताप, आर्द्रता, वायुवेग में परिवर्तन होते है । इस सभी को ध्यान में रखते हुए फसल का चयन एवं बीजारोपण, सस्य तकनीकों का उपयोग करना पडता है ।
- प्रत्येक मृदा की उर्वरता के अनुसार उसमें रासायनिक उर्वरक डाला जाना, कब एवं कितनी मात्रा में सिंचाई करना किस प्रकार का कीटनाशक रसायन कितनी मात्रा में फसल पर छिडकना है , इन सबकी गणना करनाा एवं प्रत्येक कृषि जोन ,प्रक्षेत्र ,तथा फसल के लिए गताना ,मानव अकेले के बस की बात नही रह गयी है , अपितु ये सभी जटिल कार्य कम्प्यूटर के लिए कुछ सेकेन्डों का है ।

- बस कुछ प्रारंभिक डाटा की आवश्यकता पडेगी और सभी सूचनाएँ कुछ ही समय में मिल जायेंगी । नए सूचना संचार साधनों के विकास के साथ –साथ कम्प्यूटर के उपयोगों की मॉग भी बढती जा रही है।
- कम्प्यूटरों का उपयोग नए–नए क्षेत्रों में हो रहा है। इससे समय की बचत ,उत्पादकता में वृद्धि एवं सूचना संचार व्यवस्था में काफी गति आई है ।
- आज कल सरकार द्वारा इस नई तकनीकि द्वारा किसान भाइयों को जमीन, खसरा, रिकार्ड इत्यादि को देखने तथा प्रतिलिपी की तत्काल की सुविधा है घर बैठे किसान अपनी जमीन का रकवा,कृषि जोत ,तथा बोई गई फसल का रिकार्ड म.प्र.शासन की भू अभिलेख की साइट में जाकर देख लेता है । इससे बाबू या पटवारी द्वारा गुमराह करनें या सतानें जैसी बातों से मुक्ति मिल गई है ।
- म.प्र.सरकार ने भूमि रिकार्ड को कम्प्यूटरी कृत करनें का कार्य लगभग पूरा कर दिया है । इससे पारदर्शिता एवं दक्षता के बारे में इस तकनीकि का जावाब नही ।
- भोगोलिक स्थिति एवं संचार व्यवस्था के अनुसार विभिन्न स्थानों पर सूचना केन्द्र स्थापित किए गए है इन सूचना केन्द्रो को कम्प्यूटर परिपथों द्वारा आपस में जोडा जाता है इस प्रकार के केन्द्रों द्वारा शासकीय सूचनाएँ कम समय में प्राप्त की जा सकती है ।

मौसम सेवायें

- आम जनता तथा किसानों को आगामी पूर्वानुमान बताने के लिए उपयोग किया जा रहा है।
- प्रत्येक जिला स्तर पर स्वचलित मौसम केन्द्र तथा तहसील स्तर पर स्वचलित वर्षा मापक यंत्र लगाए गए है।
- मौसम विज्ञान कृषको के लिए एक वरदान साबित होता है।

- भारत की अर्थ व्यवस्था में मानसून का बहुत बडा योगदान है । अतः मौसम की भविष्य वाणी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पडता है ।

- मौसम विभाग अभी भी दिल्ली समेत कई स्थानों पर नाउकास्ट सेवा देता है।

स्वचलित मौसम केन्द्र

- भारत सरकार मौसम विज्ञान विभाग भी अपनी इस सूचना कांति द्वारा आम जनता का किसानों को आगामी पूर्वानुमान के लिए उपयोग किया जा रहा है। प्रत्येक जिला स्तर पर स्वचलित मौसम केन्द्र तथा तहसील स्तर पर स्वचलित वर्षा मापक यंत्र लगाए गए है ।
- उसी प्रकार कृषि मौसम एकक सलाहें जो कि हर राज्य का मौसम केन्द्र प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार को आगामी पॉच दिनों के लिए जारी करता है इसमें राज्य की भौगोलिक संरचना तथा उस स्थान पर बोई जानें वाली फसल के लिए मौसमीय तत्व तथा कृषि कालेजों की सहायता से बीज का चयन ,बचाव के तरीके कीटनाशकों का छिडकाव तथा बचाव के उपाय की सलाहें एक संयुक्त समाचार प्रसारण जारी करता है जो कि मौसम विज्ञान विभाग की वेब साइट तथा अनय माध्यमों आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र, जिला तहसील स्तर के कृषि अधिकारी तथा मेल, एस एम एस द्वारा विभिन्न कंम्पनियों की सहायता से प्रेषित की जाती है ।

- साथ ही किसानों द्वारा मौसम विभाग की टोल फ्री सेवा 18001801717 पर 24x7घंटों उपलब्ध है एवं प्रादेशिक स्तर पर मौसम केन्द्र तथा राज्य के अन्य शहरो के मौसम केन्द्रों पर फोन द्वारा भी जानकारी ली जाती है।
- किसी भी कांति के शुरूआत में अनेक प्रकार की कठिनाईयॉ एवं अडंगे आते है तथा भिन्न–भिन्न प्रकार की भ्रांतियॉ भी उपजती है लेकिन जब विधिवत स्थापित हो जाता है तो उसका फल मिलना शुरू हो जाता है।
- जब कम्प्यूटर के उपयोग का जिक्र होता है तो निश्चित ही एक ऐसी कार्य पद्धति का विचार मन में आता है जो ज्यादा भरोसेमंद सही तथ्यों के उपर आधारित एवं कुशलता से पटिपूर्ण हो तकि हमारे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र को अधिक खुशहाल एवं विकसित होनें में मदद मिल सके ।

- भारत एक कृषि प्रधान देश है। किसी भी कृषि प्रधान देश की प्रगति तथा उसका आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर करता है। जिस प्रकार देश का आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर करता है उसी प्रकार कृषि का विकास एवं प्रगति उस देश की जलवायु एवं मॉनसून पर निर्भर है।
- मॉनसून का समय पर आना अथवा विलम्ब से आना दोनो स्थितियॉ ही कृषि को प्रभावित करती है यदि कृषकों को मॉनसून के बारे में कुछ पूर्वानुमान की जानकारी हो तो वे अपनी फसल को और अधिक उपजाउ भी वना सकते है तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि सूखा अदि से बचा भी सकते है।
- अगर हम एक उदाहरण दें कि कृषक को मॉनसून के बारे में कोई पूर्वानुमान नहीं है और न कोई जानकारी है कि मॉनसून कब आयेगा तो मॉनसून की प्रतिक्षा में उसकी फसल नष्ट होनें की सम्भावनाएँ बढ सकती है।
- अतः मौसम विज्ञान कृषको के लिए एक वरदान साबित होता है। वैसे तो मौसम विज्ञान हर साधारण मनुष्य एवं जीव–जन्तुओं को किसी ना किसी रुप में प्रभावित करता है लेकिन कृषि के क्षेत्र में उसकी भूमिका अतुलनीय है।

- भारत एक विकासशील देश है यहॉ की 70 प्रतिशत जनता गॉवों में निवास करती है। भारत की अर्थ व्यवस्था में मानसून का बहुत बडा योगदान है । अतः मौसम की भविष्य वाणी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पडता है ।
- अतःसमय पर सूचनाओं का पहुॅचना बहुत जरूरी है ,इसके संचार प्रणाली का उपयोग मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किया जाता है। इससे त्वरित सूचनाएँ आमजन तक पहुॅच जाती है ।
- विगत दिनों नेपाल में आए भूकम्प की जानकारी हमारी वेब साइट तथा अन्य फोन के द्वारा शीघ्र लोगों तक पहुॅचाई गई । ग्रामीण कृषि मौसम सेवा के अंतर्गत कृषि मौसम सलाहें वेब साइट तथा किसान पोर्टल सेवा में एसएमएस के द्वारा किसानों को तुरन्त मिल जाती है ।
- मौसम केन्द्रों में 24X7 घण्टे फोन करनें पर आम आदमी कभी भी मौसम ले सकता है । देश में टी.वी ,चैनल ,न्यूज पेपर या मौसम एप्स से तुरन्त जानकारी लोगों तक पहुॅच जाती है । बाढ चेतावनी, झंझावात या अन्य हर तरह की मौसम चेतावनी प्रदेश सरकार तथा अन्य संचार माध्यम, रेडियो, टीवी से शीघ्र पहुॅच जाती है । वर्षा के ऑकडे आम जनता तक नई सूचना प्रणाली से मिल जाते है ।

- मौसम सेवाओं के लिए हमारी मौसम विभाग की वेबसाइट में हर तरह की जानकारी देश के बडे शहरों का तापमान ,मानसून ,तूफान ,कृषि मौसम ,भूकम्प आदि हर तरह की जानकारी उपलब्ध है ।
- भारत के लिए ब्लाक तहसील स्तर पर ए.डब्लू एस/ए आर.जी लगाए गए है । जो कि सेटेलाइट के माध्यम से हर घण्टे तापमान,वर्षा ,हवा की दिशा,रफ्तार ,दबाव,आदि घर बैठे इन्टरनेट के द्वारा प्राप्त हो सकती है ।
- लोगों को मौसम की सूचनाए अब फोन पर एसएमएस के जरिए उपलब्ध हो रही है ।
- दिनॉक 25 दिसम्बर 2014 को गुढ गवर्नेस डे के मौके पर इस सेवा की शुरूआत हुई। इसके तहत कोई भी व्यक्ति अपने मोबाईल फोन को मौसम विभाग के पास दर्ज कराकर मौसम की चेतावनी की सूचनाएँ घर बैठे हासिल कर सकता है । जिससे आम जनता मौसम का आगे का मिजाज भॉप सके । और इसके अनुसार अपनी यात्रा और अन्य कार्यक्रमों की योजना बनाएँ । यदि भारी बारिश ,घने कोहरे की आशंका है तो लोगों को चार –पॉच घण्टे पहले ही मोबाईल पर एसएमएस के जरिए इसकी सूचना मिल जाएगी । इससे लोग अपने कार्यक्रम में आवश्यक बदलाव कर सकेगें ।

- विगत वर्ष उत्तराखण्ड में हुई त्रासदी की पूर्व सूचना होते हुए भी लोगों तक इसलिए नहीं पहुँचाई जा सकी क्योकि इस किस्म की सेवा उपलब्ध नहीं थी । लेकिन अब मौसम विभाग ने इसके लिए आवश्यक तकनीकि क्षमता हासिल कर ली है । यह सेवा निशुल्क रखी गई है ।

- मौसम विभाग अभी भी दिल्ली समेत कई स्थानों पर नाउकास्ट सेवा देता है। जिससे प्रत्येक चार घण्टे में आगे के मौसम की सूचना दी जाती है । यह सूचना अभी वेबसाइट पर उपलब्ध है ।

निष्कर्ष

- इस देश को उन्नत और समृद्ध बनने के लिए के लिए हिंदी माध्यम से ही बढ़ना होगा क्योंकि हिंदी ही भारत में जन-जन की भाषा है।

- मातृभाषा में अपने विचारों को कुशलतापूर्वक प्रभावी और सुंदर ढंग से व्यक्त करना बहुत ही आसान है ।

विशेष आभार

डॉ. अनुपम काश्यपि एवं अपूर्वा सिंहरौल का इस विषय में समर्थन के लिए विशेष आभार।

धन्यवाद !!!